मैं हार नही मानूंगा..

जीवन के अन्यायों से
मैं हार नही मानूंगा..

भरसक कोशिश करके भी
गर जीत नही पाऊगां
पथ की बाधाओं से पर
कभी हार नही मानूंगा..

सत्य मार्ग पर चलकर
कितनी ही विपदायें हो
उनसे घबराकर भी मै
कभी हार नही मानूगां

लकडी की तरह जल जाउं
दुविधाओं की अग्नि में
मानवता की खातिर पर
मैं हार नही मानूगां

सपने बिखरें या टूटें
इस कर्मभूमि में अपनी
मैं अभय रूप धर कर फिर
कभी हार नही मानूगां

मैं हार नही मानूंगा..

अभय शर्मा, मुम्बई 1 मार्च 2007